गुप्तकालीन प्रशासन एवं वाणिज्य व्यापार

Class → (B.A. HONS.)

6th lecture

— Mamta Rani

Scanned with CamScanner

गुप्तकालीन प्रशासन एवं वाणिज्य-व्यापार

→ मौर्य प्रशासन के विपरीत गुप्त प्रशासन विकेन्द्रीकरण पर आधारित था। यहाँ राजा के बाद सामंत लोग सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

→ सामंतवादी प्रथा का जन्म सातवाहन काल में हुआ, लेकिन इसका सबसे अधिक विकास गुप्त काल में हुआ। इस समय भी शासक व्यवस्थापिका कार्यपालिका और न्यायपालिका का सर्वोच्च अधिकारी था।

यह परमभागवत, महाराजाधिराज, परमभट्टारक आदि की उपाधि धारण करता था। गुप्त वंश के अधिकांश शासकों ने परमभागवत की उपाधि धारण किया था। यह कुछ मंत्रियों के सहयोग से शासन करते थे। इनके प्रशासन में महारानी लोग भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी तथा परमभट्टारिका तथा साम्राज्ञी आदि की उपाधि धारण करता थी।

कुछ महत्वपूर्ण अधिकारी निम्नलिखित हैं —

(1) हरिषेण :- यह समुद्रगुप्त का संधिविग्रहिक और महादण्डनायक था।

(2) वीरसेन :- यह चन्द्रगुप्त द्वितीय संधिविग्रहिक और महादण्डनायक था।

(3) पृथ्वीसेन :- यह चन्द्रगुप्त II का मंत्री और कुमारामात्य था।

⇒

Scanned with CamScanner

प्रमुख शब्दावली	अर्थ
संधिविग्रहिक	- युद्ध एवं शांति का मंत्री
महाबलाधिकृत	- न्याय का सर्वोच्च अधिकारी (न्यायाधीश)
ध्रुवाधिकरण	- राजस्व अधिकारी
बृहदश्वर	- अश्व सेना का प्रधान अधिकारी
कटुक	- गज सेना का प्रधान अधिकारी
चाट - भाट	- पुलिस अधिकारी

—: राजस्व प्रशासन :-

→ इस समय आमदनी का मुख्य स्रोत भू राजस्व था, जो उपज का 1/6 भाग लिया जाता था। कुछ प्रमुख शब्दावली निम्नलिखित हैं —

भाग - भू राजस्व
भोग - उपहार स्वरूप मिलने वाला कर।
उद्रंग और उपरिकर - यह भी भू राजस्व के समान था।
हिरण्य - नगदी कर
मेय - अनाज के रूप में लिया जाने वाला कर।
विष्टि/बेगार - बिना मजदूरी दिये, कार्य को करा लेना।

—: वाणिज्य - व्यापार :—

कुमारगुप्त-I के प्रथम समय वाणिज्य - व्यापार में बहुत अधिक विकास हुआ था। इस समय श्रेष्ठी लोग मुख्य रूप से व्यापार करते थे। व्यापारिक समूह को निगम कहा गया है।
→ व्यापारिक कारवाँ का नेतृत्व करने वाला सार्थवाह कहा गया है।
→ मंदसौर अभिलेख में रेशम बुनकर (तंतुवाय) का उल्लेख किया गया।

Scanned with CamScanner

बारसुल मंदसौर अभिलेख के लेखक थे।
→ इस समय पूर्वी क्षेत्र में ताम्रलिप्ति और पश्चिमी क्षेत्र में भड़ौच सबसे प्रमुख बंदरगाह था। इथोपिया से हाथी दाँत, चीन से रेशम (चीनांशुक) और ईरान, इराक बैक्ट्रिया से उत्तम नस्ल का घोड़ा आयात किया जाता था।
→ गुप्त काल में दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से सबसे अधिक व्यापार किया जाता था।

मुद्रा व्यवस्था :—

वाणिज्य-व्यापार की मुद्रा व्यवस्था ने गति प्रदान किया था। इस समय सोने के सिक्के को दीनार कहा गया है।

फाहियान के अनुसार :-

गुप्तकाल में दैनिक लेन-देन में कौड़ियों का प्रयोग किया जाता था।
→ बयाना से सर्वाधिक सिक्कों का ढेर मिला है।

पतन का कारण :—

गुप्तवंश के पतन के लिए अनेक कारण जिम्मेदार हैं —

(i) अयोग्य उत्तराधिकारी
(ii) कमजोर आर्थिक स्थिति
(iii) सामंतवादी प्रथा की भूमिका
(iv) हूणों का आक्रमण।

=x=

Scanned with CamScanner